Sociology) Indian Society (Part B) Part II
Paper II

From—
Dr. Arun Kumar
Reader
Dept of Sociology
Shershah College
(Sasaram)

1/9/20
Saturday

(पुरुषार्थ)
Purusharthā

- हिन्दु विचारधारा के सन्दर्भ में डॉ गोपाल के अनुसार भारतीय संस्कृति यह स्वीकार करती है कि भोगमय जीवन वास्तव में स्वार्थपूर्ण है। इस कारण यह संकीर्ण है। यह उच्चतर आदर्श का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। इसलिए इस संसार और इसके सुखों को सर्वथा मान लेना उचित नहीं है, क्योंकि सर्वोच्च ऐश्वर्य भी धीरे-2 नष्ट होते होते एक दिन बिल्कुल ही मिट जाता है। किन्तु सांसारिक वस्तुओं सुख व सम्पत्ति के नश्वर होते हुए भी उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। चूंकि वे शाश्वत नहीं है, इसलिए उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है - ऐसा विचार करना उचित न होगा। शाश्वत सत्ता सांसारिक तथ्यों के रूप व्यक्त होती है और इसलिए उस शाश्वत सत्ता अथवा परम सत्य तक पहुंचने का मार्ग संसार के ही माध्यम से है।
- वास्तव में दोनों परस्पर सम्बन्धित है और उन्हें पृथक् करना अनुचित होगा। इन दोनों को मिलाकर ही मानव-जीवन के वास्तविक स्वरूप महत्व और लक्ष्य का निरूपण और निर्धारण करना चाहिए। यही महत्वपूर्ण समन्वय की अभिव्यक्ति - पुरुषार्थ का सिद्धान्त है।

पुरुषार्थ उस सार्थक जीवन शक्ति का द्योतक है जो कि व्यक्ति को सांसारिक सुख भोग के बीच अपने धर्म पालन के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति या मोक्ष की राह दिखलाता है। पुरुषार्थ इस लोक को परलोक से मिलाता है - सीमित मानव जीवन को असीम तथा पूर्ण परमात्मा से परिचित करवाता है और मनुष्य की भौतिक बौद्धिक शारीरिक तथा नैतिक उन्नति का पथ प्रशस्त करता है, इस अर्थ में पुरुषार्थ उन मानवीय गुणों का समन्वय है जो कि भौतिक सुख और आध्यात्मिक उन्नति के बीच एक सन्तुलन की सृष्टि करता है।

- अतः स्पष्ट है कि पुरुषार्थ के चार आधार है जो कि मानव जीवन के चार प्रमुख उद्देश्यों को भी व्यक्त करते हैं। वे हैं — धर्म - अर्थ - काम - और मोक्ष - मोक्ष मानव - जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। पर इस लक्ष्य की प्राप्ति तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि व्यक्ति का मन सांसारिक सुख भोग से सम्पूर्ण भर जाए। चरम तृप्ति के बाद ही विरक्ति वैराग्य या उदासीनता का जन्म हो सकता है।

Scanned by TapScanner

इस तृप्ति को प्राप्त करने के लिए ही अर्थ तथा काम का
भी जीवन के लिए कम नहीं है। मनुष्य अर्थ तथा काम
दूर तथा डूब न जाए इस कारण उसके पथप्रदर्शन के लिए धर्म
आवश्यकता होती है।

- पुरुषार्थ की अवधारणा में अन्तर्निहित उपरोक्त चारों तत्व को डॉ कपाडिया ने इस प्रकार व्यक्त किया है – मोक्ष मानव जीवन के चरम उद्देश्य एवं मानव की आन्तरिक आध्यात्मिक अनुभूति का प्रतीक है" अर्थ मनुष्य में वस्तुओं को प्राप्त करने व संग्रह उपभोग व अन्य प्रवृत्तियों को बतलाता है। काम मानव के सहज स्वभाव और भावुक जीवन को व्यक्त करता है। तथा उसकी काम भावना और सौन्दर्य की प्रवृत्ति की तुष्टि की ओर संकेत करता है। अर्थ और काम ये दोनों इस संसार में मनुष्य के सांसारिक लगाव, कार्यकलाप एवं जीवन की सफलता का प्रतिनिधित्व करते हैं। धर्म मानव की पाशविक और दैवीय प्रकृति के बीच की शृंखला है।

- इस प्रकार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - मनुष्य-जीवन के इन चार उद्देश्यों व आधार से - सम्बन्धित स्वरूप को कहते हैं। इनमें जीवन के अन्तिम उद्देश्य के रूप में मोक्ष को मान्यता दी गई है पर जीवन के अन्य वास्तविक पक्षों, अर्थ तथा काम की भी उपेक्षा नहीं की गई है, और साथ ही उन पर धर्म का नियन्त्रण भी रखा गया है इस रूप में पुरुषार्थ मानव जीवन के एक सम्पूर्ण व सार्थक स्वरूप का द्योतक है।

---

from –
- Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
Sasaram

Scanned by TapScanner